INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

(मुख्य परीक्षा हेतु)

Level – 2

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ऊँ।।

भाग – 1

राजस्थान का भूगोल + इतिहास + संस्कृति + भाषा

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2 हेतु)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें/*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/ny6pbb

Online Order करें - https://shorturl.at/liVKO

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

	राजस्थान का भूगोल	
क्र.सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	स्थिति एवं विस्तार	1
2.	राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप	15
3.	मानसून तंत्र एवं जलवायु	25
4.	(अपवाह तंत्र) - नदियाँ, झीलें एवं बाँध	32
5.	एनीकट, जल संरक्षण विधियाँ एवं तकनीकियाँ	54
6.	राजस्थान की वन संपदा	56
7.	वन्य जीव-जंतु वन्य जीव संरक्षण एवं अभ्यारण्य	60
8.	मृदाएँ एवं मृदा संरक्षण	64
9.	राजस्थान की प्रमुख फसलें	67
10.	जनसंख्या, जनसंख्या-घनत्व, साक्षरता, और लिंगानुपात	72
11.	राजस्थान की जनजातियाँ एवं जनजातीय क्षेत्र	78
12.	धात्विक एवं अधात्विक खनिज	81
13.	राजस्थान के ऊर्जा संसाधन : परम्परागत एवं गैर परम्परागत	88
14.	राजस्थान के पर्यटन स्थल	97
15.	राजस्थान में यातायात के साधन	102
16.	पशुधन एवं पशु मेले	109
	इतिहास एवं संस्कृति	
1.	राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ	116

2.	राजस्थान की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, प्रमुख राजवंश	120
3.	प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था	165
4.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	173
5.	1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान आधुनिक राजस्थान	184
6.	राजस्थान में जनजाति एवं किसान आंदोलन	191
7.	प्रजामण्डल	202
8.	राजस्थान का एकीकरण	211
	कला एवं संस्कृति	
1.	राजस्थान की स्थापत्य कला, किले स्मारक महल एवं छतरियाँ	216
2.	बावड़ी एवं हवेलियाँ	226
3.	राजस्थान के मेले एवं त्यौहार	231
4.	लोक कला, लोक संगीत	241
5.	लोक नाट्य एवं लोक नृत्य	244
6.	राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत	250
7.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय	258
8.	लोक देवता एंव लोक देवियाँ	265
9.	राजस्थान के वस्त्र एवं आभूषण	271
10.	राजस्थान की चित्रकलाएँ एवं हस्तशिल्प	272

	राजस्थानी भाषा	
1.	राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियाँ	279
2.	प्रमुख राजस्थानी कृतियाँ एवं प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार	281
3.	राजस्थनी संत साहित्य एवं लोक साहित्य	284

राजस्थान का भूगोल

अध्याय – 1

स्थिति एवं विस्तार

राजस्थान का विस्तार -

इसका अध्ययन करने से पहले इससे जुड़े हुए कुछ अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझिए-

1. भूमध्य रेखा
2. कर्क रेखा
3. मकर रेखा
4. अक्षांश
5. देशांतर

इन मानचित्र को ध्यान से समझिए-

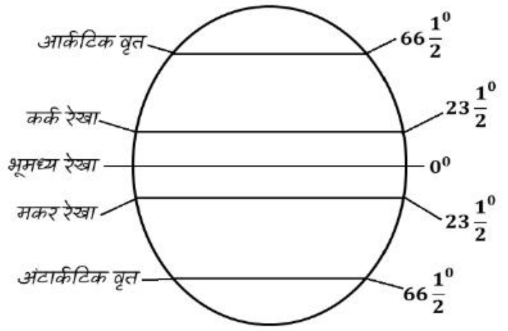

(मानचित्र न. 1)

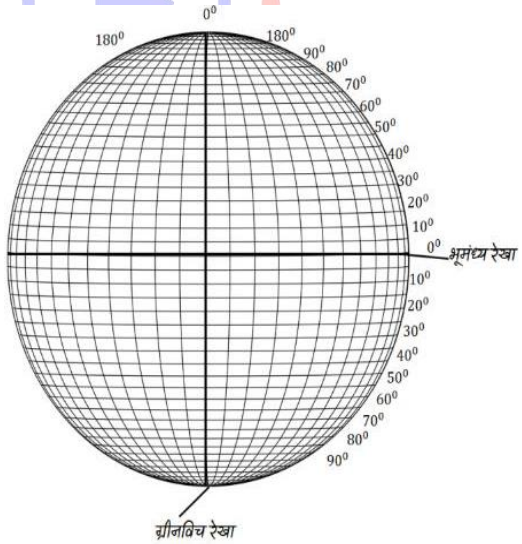

(मानचित्र न. – 2)

नोट -भूमध्य रेखा :- "विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा" पृथ्वी की सतह पर उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर स्थित एक काल्पनिक रेखा हैयह पृथ्वी को दो गोलार्द्धों, उत्तरी व दक्षिणी में विभाजित करती है।

इस रेखा पर प्राय: वर्ष भर दिन और रात की अवधि बराबर होती, यही कारण है कि इसे विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा कहा जाता है।

विषुवत रेखा के उत्तरी ओर पर कर्क रेखा है व दक्षिण की ओर पर मकर रेखा है।

नोट- पृथ्वी/ग्लोब को दो काल्पनिक रेखाओं द्वारा "**उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम**"में विभाजित किया गया है । इन्हें अक्षांश व देशांतर रेखाओं के नाम से जानते है।

अक्षांश रेखाएं- वह रेखाएं जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई है, अथार्त भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते है। भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा माना गया है। (देखें मानचित्र -1)

ग्लोब पर कुछ अक्षांशों की संख्या (90 डिग्री उत्तरी गोलार्द्ध में और 90 डिग्री दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180 डिग्री है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181 होती है।

देशांतर रेखाएं- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360 डिग्री रेखाओं को देशांतर रेखाएं कहा जाता है। ग्रीनविच, जहां ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है, से गुजरने वाली याम्योत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए। इस याम्योत्तर को प्रमुख याम्योत्तर कहते है। इसका मान देशांतर है तथा यहां से हम 180 डिग्री पूर्व या 180 डिग्री पश्चिम तक गणना करते है।

नोट –उपर्युक्त विषय को अधिक विस्तार से समझने के लिए हमारी अन्य पुस्तक '**भारत एवं विश्व का भूगोल**' पढ़ें"।राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°3" से 30°12" उत्तरी अक्षांश ही तक है जबकि राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 69'30" से 78'17" पूर्वी देशांतर है। (देखें मानचित्र A, B)

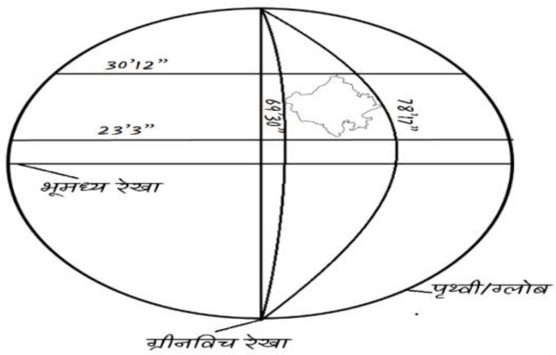

(मानचित्र-A)

नोट- राजस्थान का कुल अक्षांशीय विस्तार **7°9"(30°12" 23°3")** है तथा कुल देशांतरीय विस्तार **8°47" (78°17" 69°30")** है।

1° = 4 मिनट
1" =111.4 किलोमीटर होता है।

राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है जो कि संपूर्ण भारत का 10.41% है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है जो संपूर्ण विश्व का 2.42% है।

1 नवंबर 2000 से पूर्व क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य मध्यप्रदेश था लेकिन 1 नवंबर 2000 के बाद मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग होने हो जाने पर भारत का सबसे बड़ा राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान बन गया।

2011 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 68,548,437थी जो कि कुल देश की जनसंख्या का 5.67% है।

- ***कर्क रेखा राजस्थान में स्थित:-***

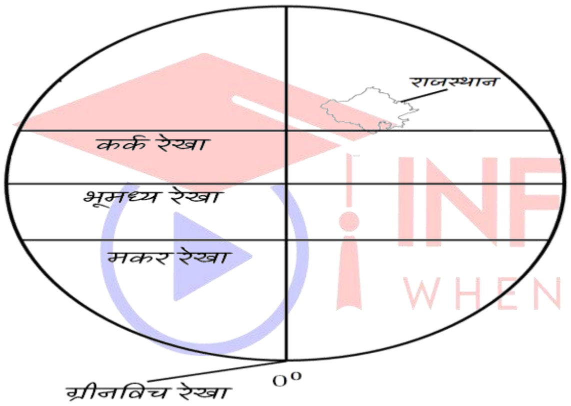

कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है-

- ***(राजस्थान, मध्यप्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, गुजरात, मिजोरम, त्रिपुरा)***
- राजस्थान में कर्क रेखा बांसवाड़ा जिले के मध्य से कुशलगढ़ तहसील से गुजरती है, इसके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिले को भी स्पर्श करती है अर्थात् कुल दो जिलों से होकर गुजरती है।
- राजस्थान में कर्क रेखा की कुल लंबाई 26 किलोमीटर है। राजस्थान का सर्वाधिक भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है।
- राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक नजदीकी शहर बांसवाड़ा है।
- भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है, अतः वहां पर तापमान अधिक होता है। जैसे-जैसे भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है।
- राजस्थान में बांसवाड़ा जिले में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती है।

  कारण- बांसवाड़ा सर्वाधिक दक्षिण में स्थित है तथा श्रीनगर सबसे उत्तर में स्थित है।

  राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के अनुसार राज्य का सबसे गर्म जिला बांसवाड़ा होना चाहिए एवं राज्य का सबसे ठंडा जिला श्रीगंगानगर होना चाहिए लेकिन वर्तमान में राज्य का सबसे गर्म व सबसे ठंडा जिला चूरु है। यह जिला सर्दियों में सबसे अधिक ठंडा एवं गर्मियों में सबसे अधिक गर्म रहता है इसका कारण यहां पाई जाने वाली रेत व जिप्सम है।

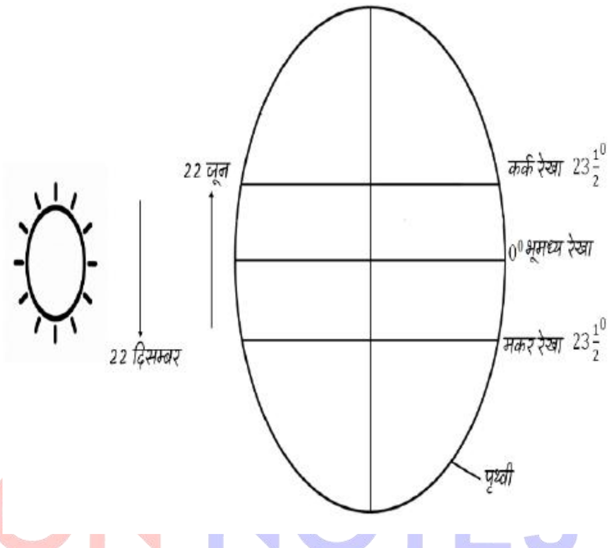

मानचित्र को ध्यान से समझिए

नोट- जैसे कि ऊपर दिए गए मानचित्र में समझाया है कि, सूर्य 21 जून को सीधा कर्क रेखा पर और 22 दिसंबर को सीधा मकर रेखा पर चमकता है। इसके अलावा 21 मार्च और 23 सितंबर को सीधे भूमध्य रेखा पर चमकता है। अर्थात् 21 जून को कर्क रेखा पर सीधे चमकने के बाद जुलाई, अगस्त, सितंबर .... दिसंबर में जैसे-जैसे समय बढ़ता जाता है वैसे-वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश मकर रेखा की ओर बढ़ता जाता है, फिर 22 दिसंबर तक मकर रेखा पर पहुंचने के बाद जनवरी, फरवरी........जून में जैसे-जैसे समय बढ़ता है वैसे-वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश कर्क रेखा की ओर बढ़ता है।

अर्थात सूर्य की सीधी किरणें कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच में पड़ती है इस क्षेत्र को उष्णकटिबंधीय क्षेत्र कहते है। ध्रुवों पर सूर्य की किरणें ना पहुंचने के कारण वहां वर्ष भर बर्फ पाई जाती है।

इस प्रकार राजस्थान का सबसे दक्षिणी जिला बांसवाड़ा में सूर्य की सबसे ज्यादा सीधी किरणें पड़ती है (कर्क रेखा के सबसे नजदीक होने के कारण) इसलिए बांसवाड़ा को राजस्थान का सबसे गर्म जिला होना चाहिए, लेकिन चूरु सबसे गर्म जिला है (कारण-रेत) । इसी प्रकार सबसे उत्तरी जिला श्रीगंगानगर में सूर्य की

सबसे ज्यादा तिरछी किरणें पड़ती हैं, इसलिए श्रीगंगानगर को राजस्थान का सबसे ठंडा जिला होना चाहिए लेकिन चूरु सबसे ज्यादा ठंडा जिला है (कारण-जिप्सम)

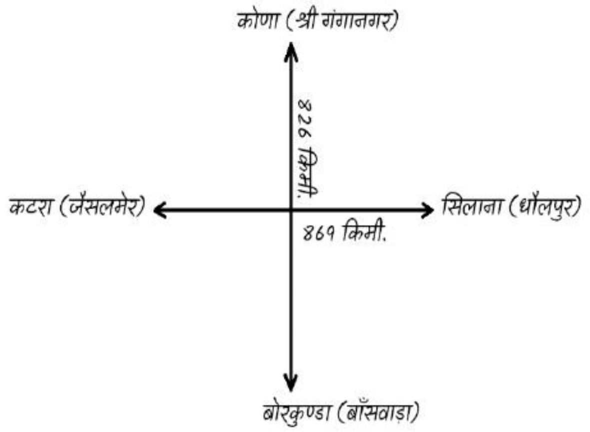

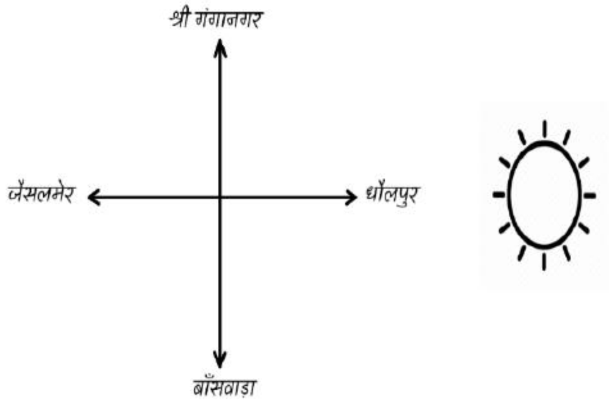

पूर्वी देशांतरीय भाग सूर्य के सबसे पहले सामने आता है, इस कारण सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त राजस्थान के पूर्वी भाग धौलपुर में होता है, जब कि सबसे पश्चिमी जिला जैसलमेर है। अतः जैसलमेर में सबसे अंत में सूर्योदय व सूर्यास्त होता है।

विस्तारः-

राजस्थान राज्य की उत्तर से दक्षिण तक की कुल लंबाई 826 किलोमीटर है तथा इसका विस्तार उत्तर में श्रीगंगानगर जिले के कोणा गांव से दक्षिण में बांसवाड़ा जिले की कुशलगढ़ तहसील के बोरकुंड गांव तक है। इसी प्रकार पूरब से पश्चिम तक की चौड़ाई 869 किलोमीटर है तथा विस्तार पूरब में धौलपुर जिले के जगमोहनपुरा की ढाणी, सिलाना गांव से पश्चिम में जैसलमेर जिले के कटरा गांव (सम-तहसील) तक है।

आकृति

विषम कोणीय चतुर्भुज या पतंग के आकार के समान है। राज्य की स्थलीय सीमा 5920 किलोमीटर (1070 अंतरराष्ट्रीय व 4850 अंतर्राज्यीय) है।

रेडक्लिफ रेखा

रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है। इसके संस्थापक सर सीरिल एम. रेडक्लिफ को माना जाता है। इसकी स्थापना 14/15 अगस्त 1947 को की गई। इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3310 किलोमीटर है। रेडक्लिफ रेखा पर भारत के **तीन राज्य व दो केंद्र शासित प्रदेश** स्थितहैं।

1. पंजाब (547 कि.मी.)
2. राजस्थान (1070 कि.मी.)
3. गुजरात (512 कि.मी.)

केंद्र शासित प्रदेश

1. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी. लद्दाख व J&K दोनों)
2. लद्दाख

रेडक्लिफ रेखा के साथ सर्वाधिक सीमा- **राजस्थान** (1070 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के साथ सबसे कम सीमा- गुजरात (512 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय- **श्रीनगर**

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दुर राजधानी मुख्यालय- **जयपुर**

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य- **राजस्थान**

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य- **पंजाब**

- रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा **1070 कि.मी.** है। जो **राजस्थान के पांच जिलों** से लगती है।

1. श्रीगंगानगर
2. बीकानेर
3. फलौदी
4. जैसलमेर- 464 कि.मी.
5. बाड़मेर- 228 कि.मी.

- रेडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में श्रीगंगानगर के **हिन्दूमल कोट** से लेकर दक्षिण - पश्चिम में बाड़मेर के बाखासर गाँव, सेडवा तहसील तक विस्तृत है।
- रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिले पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयारखान तथा सिंध प्रान्त के घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपाकर राजस्थान से सीमा बनाती हैं।

राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा – **बहावलपुर**

राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा- **खैरपुर**

पाकिस्तान के दो प्रांत राजस्थान की सीमा को छूते हैं।

1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- राजस्थान की रेडक्लिफ रेखा से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) की लगती है।
- रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय –श्रीगंगानगर
- रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय - बीकानेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे बड़ा जिला - जैसलमेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे छोटा जिला – **श्रीगंगानगर**

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

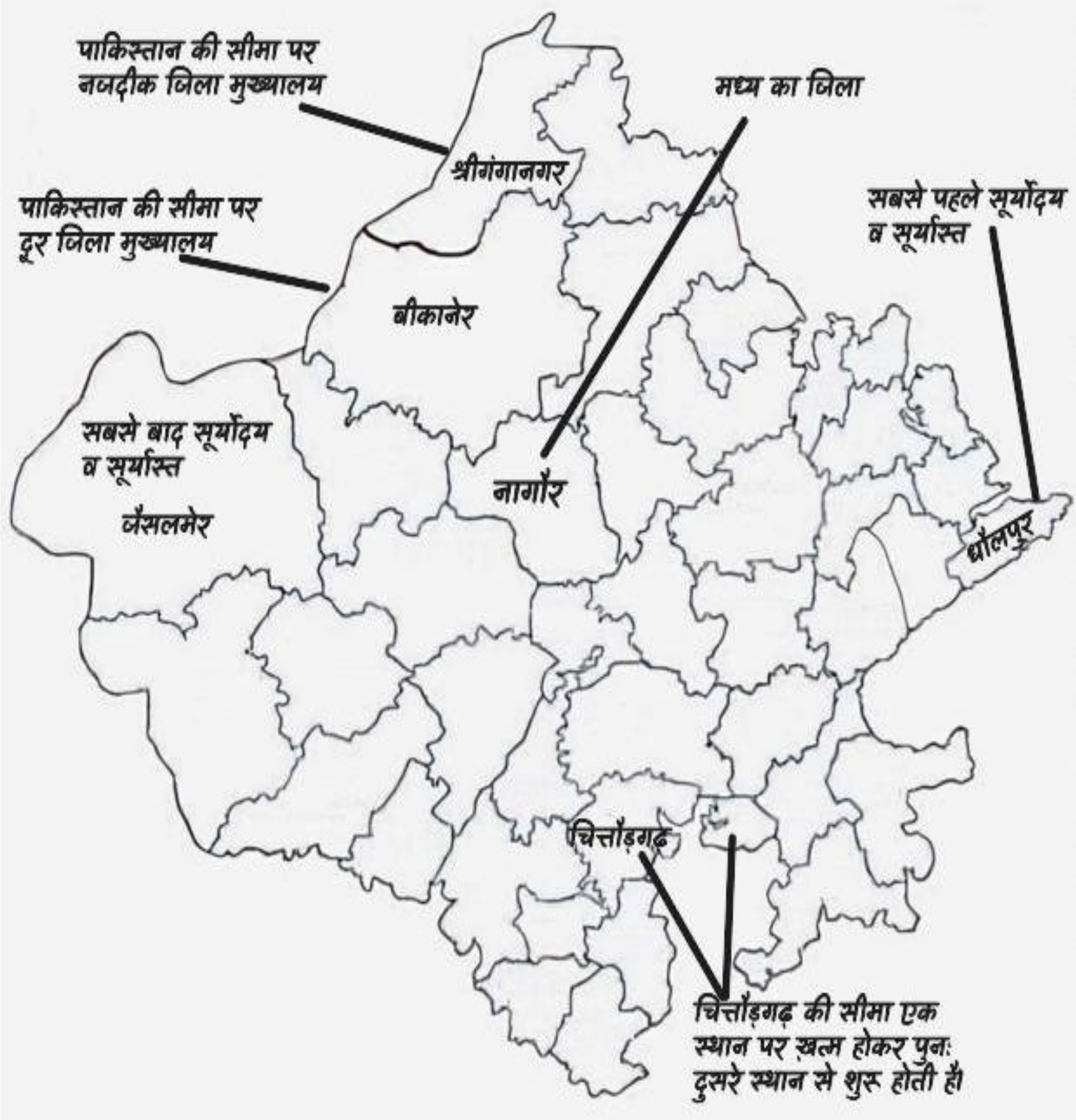

- राजस्थान के केवल अंतर्राष्ट्रीय सीमा वाले जिले - 3 (बीकानेर, जैसलमेर, फलौदी)
- राजस्थान के 13 जिलें ऐसे जिलें हैं जो न तो अंतरराज्यीय सीमा बनाते हैं तथा न ही अंतरराष्ट्रीय ।
- झालावाड़ मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा (520 कि.मी) बनाता है तथा बाड़मेर गुजरात के साथ न्यूनतम 14 कि.मी. की सीमा बनाता है।

राजस्थान के 2 ऐसे जिले है जिनकी अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सीमा है –

1. श्रीगंगानगर (पाकिस्तान + पंजाब)
2. बाड़मेर (पाकिस्तान + गुजरात)

राजस्थान के 4 जिले ऐसे है जिनकी सीमा दो – दो राज्यों से लगती है-

हनुमानगढ़ :- पंजाब + हरियाणा
धौलपुर :- उत्तरप्रदेश + मध्यप्रदेश
बाँसवाड़ा :- मध्यप्रेदश + गुजरात
डीग :- उत्तरप्रदेश + हरियाणा

सलूंबर जिले में 5 उपखंड (सराडा, सेमारी, लसाडिया, झल्लारा और सलूम्बर) शामिल किए गए हैं।

राजस्थान के संभाग

30 मार्च 1949 को राजस्थान में संभागीय व्यवस्था की शुरुआत हुई थी ।

शुरुआत में राजस्थान में 5 संभाग (जयपुर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर, बीकानेर)थे।

24 अप्रैल 1962 को संभागीय व्यवस्था को तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाडिया ने बंद कर दिया ।

संभागीय व्यवस्था की पुनः शुरुआत 26 जनवरी 1987 को तत्कालीन मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी नें की तथा अजमेर को जयपुर से अलग कर छठा संभाग बनाया ।

4 जून 2005 को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे नें भरतपुर को सातवाँ संभाग बनाया ।

राजस्थान के 7 संभागो के नाम निम्नलिखित है-

1. अजमेर
2. उदयपुर
3. कोटा
4. जयपुर
5. जोधपुर
6. बीकानेर
7. भरतपुर

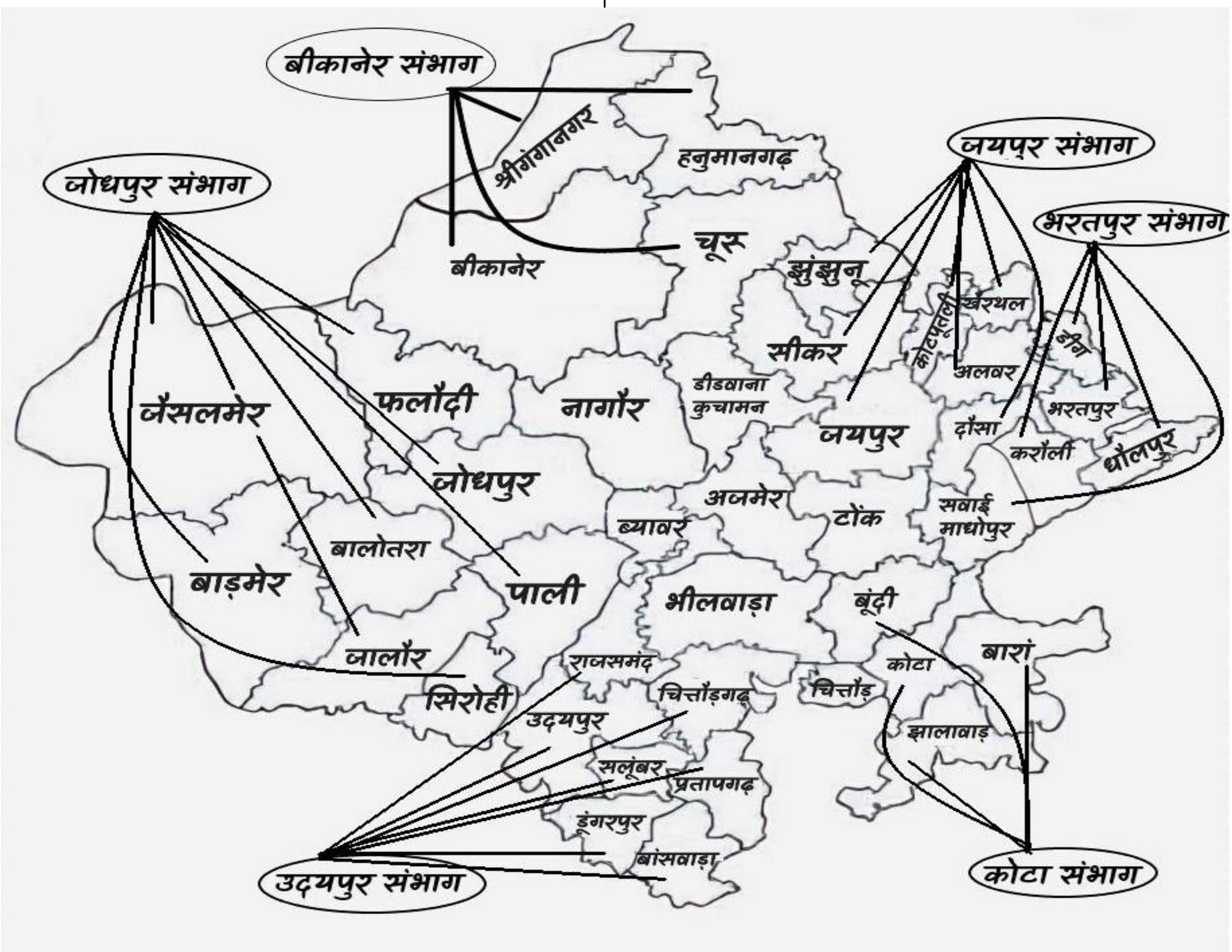

1. ***अजमेर संभाग*** – अजमेर, ब्यावर, नागौर, डीडवाना-कुचामन, टोंक व भीलवाड़ा
2. ***उदयपुर संभाग*** – उदयपुर संभाग में उदयपुर, सलुम्बर, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़ व राजसमन्द जिले आते हैं।
3. ***कोटा संभाग-*** कोटा संभाग में 4 जिले (बारां, बूंदी, कोटा, झालावाड़) आते हैं।
4. ***जयपुर संभाग*** – जयपुर संभाग में अलवर, खैरथल-तिजारा, जयपुर, कोटपुतली-बहरोड़, सीकर, झुंझुनू व दौसा जिले आते हैं।
5. ***जोधपुर संभाग-*** जोधपुर संभाग में जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, फलौदी, जोधपुर, जालौर, पाली व सिरोही आदि जिले आते है।
6. ***बीकानेर संभाग*** - बीकानेर संभाग में 4 जिले (श्री गंगानगर, हनुमानगढ़, चुरु, बीकानेर) शामिल है।
7. ***भरतपुर संभाग*** – भरतपुर संभाग में 5 जिले (भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर और डीग) शामिल है।

अंतर्राष्ट्रीय सीमा

अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाले संभाग - बीकानेर व जोधपुर

- सर्वाधिक अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाला संभाग - जोधपुर
- न्यूनतम अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाला संभाग - बीकानेर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा के नजदीक संभागीय मुख्यालय - बीकानेर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा से दूर संभागीय मुख्यालय -जोधपुर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा संभाग - जोधपुर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर क्षेत्रफल में छोटा संभाग-बीकानेर

अंतर्राज्यीय सीमा

- अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाले संभाग – 7
- केवल अंतरराज्यीय सीमा बनाने वाले संभाग – 5
- अंतर्राष्ट्रीय व अन्तर्राज्यीय दोनों सीमा बनाने वाले संभाग -2 (बीकानेर व जोधपुर)
- सर्वाधिक अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाला संभाग – उदयपुर
- सबसे कम अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाला संभाग – अजमेर
- अंतर्राज्यीय सीमा के नजदीक संभागीय मुख्यालय - भरतपुर
- अंतर्राज्यीय सीमा से दूर संभागीय मुख्यालय - जोधपुर
- अंतर्राज्यीय सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा संभाग -जोधपुर
- अंतर्राज्यीय सीमा पर क्षेत्रफल में छोटा संभाग – भरतपुर
- दो बार अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाला संभाग -उदयपुर (चित्तौड़गढ़ के दो भाग)
- राजस्थान का मध्यवर्ती संभाग - अजमेर
- राजस्थान अपने **वर्तमान स्वरुप 1 नवम्बर 1956** को आया।
- 8 जिलों वाला संभाग – जोधपुर
- 7 जिलों वाले 2 संभाग (जयपुर व उदयपुर) है ।
- 6 जिलों वाला संभाग अजमेर है।
- 5 जिलों वाला एक संभाग भरतपुर है।
- 4 जिलों वाले संभाग (बीकानेर व कोटा) है।
- राज्य के सर्वाधिक 6 संभागों की सीमा को स्पर्श करनें वाला संभाग – अजमेर
- तीन राज्यों की सीमा को स्पर्श करने वाला संभाग – भरतपुर संभाग
- सर्वाधिक वर्षा एवं आर्द्रता वाला संभाग – कोटा संभाग
- राजस्थान का पूर्वी संभाग – भरतपुर संभाग
- राजस्थान का पश्चिमी संभाग – जोधपुर संभाग
- राजस्थान का उत्तरी संभाग – बीकानेर
- राजस्थान का दक्षिणी संभाग – उदयपुर

प्रदेश के जिलों के आधुनिक उपनाम

गंगानगर	फलों की टोकरी, राजस्थान का अन्नागार, बागानों की भूमि
बीकानेर	राती घाटी, ऊन का घर
जैसलमेर	स्वर्ण नगरी, राजस्थान का अंडमान, हवेलियों का शहर, झरोखों की नगरी, रेगिस्तान का गुलाब, येलो सिटी, गलियों का शहर, पंखों का नगर, म्यूजियम सिटी
जोधपुर	ब्लू सिटी / नीला शहर, सन सिटी / सूर्य नगरी, मरुस्थल का प्रवेश द्वार / सिंहद्वार, राजस्थान की विधि नगरी
बाड़मेर	राजस्थान की थार नगरी, राजस्थान का खजुराहो
भीलवाड़ा	राजस्थान का मेनचेस्टर, वस्त्र नगरी, जू ऑफ़ मिनरल, टेक्सटाइल सिटी
सिरोही	राजस्थान का शिमला
राजसमन्द	राजस्थान की थर्मोपोली
नागौर	औजारों की नगरी, राजस्थान का धातु नगर
सीकर	हाईटेक सिटी
जयपुर	पिंक सिटी / गुलाबी नगरी, पूर्व का पेरिस, हेरिटेज सिटी
अलवर	राजस्थान का स्कॉटलैंड, राजस्थान का सिंह द्वार, राजस्थान का पूर्वी कश्मीर
भरतपुर	राजस्थान का पूर्वी सिंह द्वार, राजस्थान का प्रवेश द्वार
धौलपुर	राजस्थान का पूर्वी प्रवेश द्वार, रेड डायमंड
करौली	डांग की रानी
अजमेर	राजस्थान का हृदय, अंडे की टोकरी, सांप्रदायिक सौहार्द का शहर, राजपूताना की कुंजी, अरावली का अरमान
बूंदी	बावडियों का शहर (सिटी ऑफ़ स्टेपवेल्स), वैभव नगरी
बारां	वराह नगरी, मिनी खजुराहो (भंडदेवरा)
झालावाड़	राजस्थान का चेरापूंजी, विरासत का शहर, घंटियों का शहर (झालरापाटन)
चित्तौड़गढ़	राजस्थान का गौरव
प्रतापगढ़	राधा नगरी, कांठल
कोटा	शिक्षा का तीर्थ स्थल, राजस्थान का नालंदा, औद्योगिक नगरी, राजस्थान का कानपुर, उद्यानों का नगर
डूंगरपुर	पहाड़ों की नगरी
उदयपुर	मेवाड़, प्राग्वाट, मेदपाट, झीलों की नगरी, पूर्व का वेनिस, सैलानियों का स्वर्ग, माउंटेन और फाउंटेन का शहर, एशिया का विएना, लेक सिटी, जिंक नगरी, ऑस्ट्रेलिया जैसी आकृति

खारे पानी की झीलें –

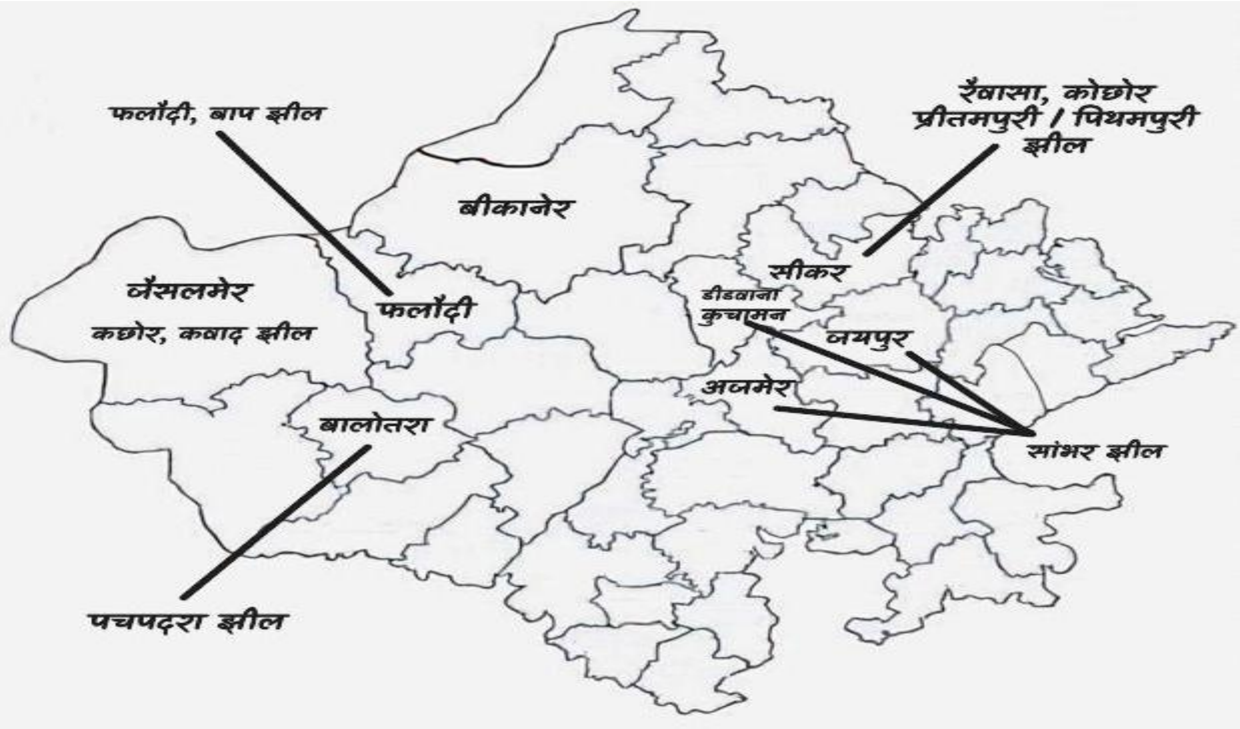

खारे पानी की झीलें

1. **सांभर झील**

- **राजस्थान के जयपुर – फुलेरा मार्ग पर जयपुर से लगभग 65 किलोमीटर दूर स्थित सांभर झील भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक एवं खारे पानी की झील है।**
- इस झील का विस्तार 3 जिलों में है – **जयपुर, अजमेर और नागौर,** लेकिन सर्वाधिक विस्तार जयपुर जिले में है और इसका प्रशासनिक अधिकार नागौर जिले का है।
- इस झील की लंबाई दक्षिण - पूर्व से उत्तर - पश्चिम की ओर लगभग 32 किलोमीटर है और चौड़ाई लगभग 3 से 12 किलोमीटर है इसका कुल अपवाह क्षेत्र लगभग 500 वर्ग किलोमीटर है।
- **सांभर झील में मेंथा नदी, रूपनगढ़ नदी, खारी नदी और खंडेला नदी आकर मिलती हैं। इस झील पर भारत सरकार की "हिंदुस्तान साल्ट लिमिटेड कंपनी" द्वारा नमक उत्पादन कार्य किया** जा रहा है ।
- हिंदुस्तान साल्ट लिमिटेड की स्थापना 1964 ई. में की गयी । इस झील में प्रति 4 मीटर की गहराई पर 350 लाख टन नमक उत्पादन होता है जो **भारत के कुल उत्पादन का 8.7% सांभर झील** से ही उत्पादित होता है।
- इसे 1990 ई. में रामसर साईट में शामिल किया गया। इस झील में **'क्यारी पद्धति'** द्वारा किया जाता है। सांभर झील में सर्दियों में फ्लेमिन्गोज (राजहंस) पक्षी उत्तरी एशिया से बड़ी संख्या में आते हैं।

इस झील से संबंधित अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य -

- **सांभर झील "स्वाईसरुबीना" नामक शैवालों के लिए प्रसिद्ध है ।** इस शैवाल से 60% प्रोटीन प्राप्त होता है।
- यह झील अन्य महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं के लिए भी जानी जाती है जैसे -
- तीर्थ स्थली देव्यानी अर्थात् **तीर्थों की नानी**
- शाकंभरी माता का मंदिर
- संत हमीदुद्दीन की पुण्य भूमि
- जहाँगीर की ननिहाल
- अकबर की विवाह स्थली
- चौहानों की राजधानी

- ऐसा माना जाता है कि **इस झील का निर्माण बिजोलिया शिलालेख के अनुसार चौहान वंश के संस्थापक वासुदेव चौहान द्वारा** करवाया गया था।
- इस झील का आकार आयताकार है इस झील पर सन् 1857 में अंग्रेजों द्वारा स्थापित सांभर साल्ट म्यूजियम स्थित है।
- **पर्यटन के क्षेत्र में रामसर साइट के नाम से भी इसे जाना जाता है।**

2. **पचपदरा झील**

- ऐसा माना जाता है कि 400 ईसा पूर्व पंचा नामक एक भील व्यक्ति के द्वारा एक दलदल को सुखाकर इस झील के आसपास की बस्तियों का निर्माण करवाया गया था इसलिए इस झील को पचपदरा झील कहते हैं
- यह झील राजस्थान **राज्य के के बालोतरा जिलें में स्थित है।**

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

भेड़ों की नस्लें

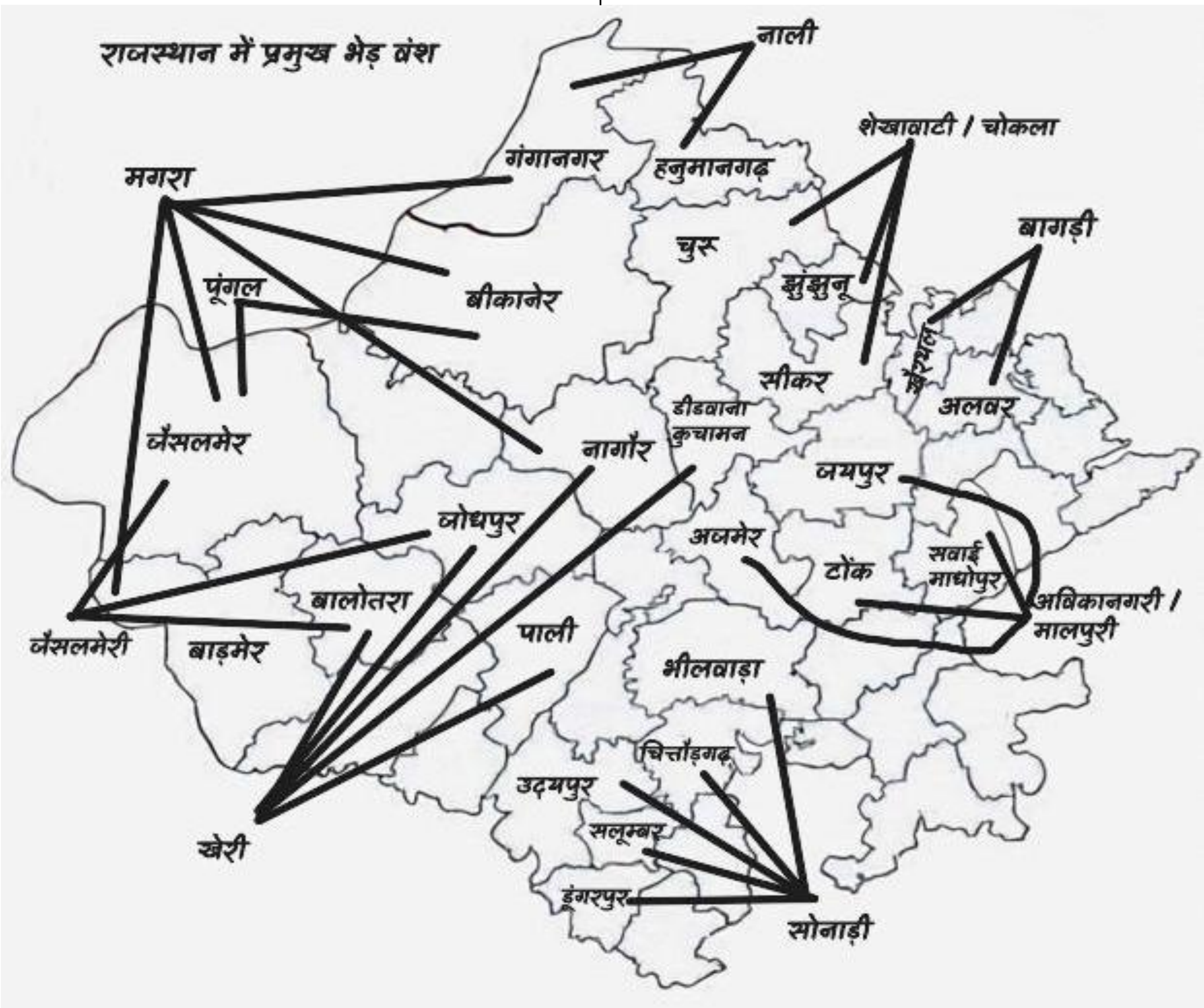

2. चोकला भेड़
- **झुंझुनूं, सीकर ,चूरू व बीकानेर** जिले में यह पाई जाती है ।
- इसका प्रजनन एवं अनुसंधान केंद्र **कोडमदेसर (बीकानेर)** में स्थित है।
- इसे छापर एवं शेखावाटी के नाम से भी जाना जाता है। इसे **भारत की मेरिनो** कहा जाता है ।
- इससे प्राप्त हुई ऊन सर्वोत्तम किस्म का है।

3. मालपुरी / अविकानगरी भेड़
- यह **जयपुर, टोंक, सवाई माधोपुर, अजमेर में** पाई जाती है ।
- **ऊन मोटी** होने के कारण गलीचे के लिए उपयुक्त है।
- इसका अनुसंधान केंद्र जयपुर में स्थित है।
- इसे देसी नस्ल भी कहा जाता है।

4. सोनाड़ी भेड़
- यह नस्ल राजस्थान में **उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, सलूम्बर, बाँसवाड़ा, भीलवाड़ा** में पाई जाती है ।
- इसके कां लम्बे होते है।
- इसका प्रजनन व अनुसंधान केंद्र चित्तौड़गढ़ में स्थित है।
- इसका **उपनाम – चनोथर**

5. पूगल भेड़
- बीकानेर के पश्चिमी भाग व जैसलमेर, नागौर में पाई जाती है।
- इस नस्ल का उत्पति स्थल पूगल तहसील बीकानेर है।

6. मगरा भेड़
- इसे **बीकानेरी चोकला** भी कहा जाता है ।
- यह बीकानेर जैसलमेर, बाड़मेर, श्रीगंगानगर और नागौर जिले में पाई जाती है।

7. नाली भेड़
- यह नस्ल मुख्य रूप से श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों में पाई जाती है ।
- इसकी **ऊन घने व लंबे रेशे** वाली होती है।
- इसका अनुसंधान केंद्र हनुमानगढ़ में है।

8. मारवाड़ी भेड़
- जोधपुर, बाड़मेर, जालौर, नागौर पाली, सिरोही में पाई जाती है।
- राजस्थान में इस नस्ल की सर्वाधिक भेड़ पायी जाती है।

- इस नस्ल की भेड़ में सर्वाधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है।
- राजस्थान में जोधपुर में इसका अनुसंधान केंद्र है।

9. **जैसलमेरी भेड़**

- यह जैसलमेर, जोधपुर, बालोतरा में पश्चिमी भाग में पाई जाती है।
- **सर्वाधिक ऊन** इस नस्ल की भेड़ों से प्राप्त होती है।
- पोकरण (जैसलमेर) व मंडोर (जोधपुर) में इसका अनुसंधान केंद्र है।

भेड़ों की विदेशी नस्लें

4. **रूसी मेरिनों भेड़ –** टोंक, सीकर, जयपुर में बहुतायत में पायी जाती है।
5. **रेम्बुलेट भेड़ –** टोंक
6. **कोरिडेल भेड़ –** टोंक में बहुतायत में पायी जाती है।
7. **डोर्सेट भेड़ –** चित्तौड़गढ़ में बहुतायत में पायी जाती है।

बकरी

- **राजस्थान का देश में प्रथम स्थान है।** नागौर जिले का वरुण गाँव बकरियों के लिए प्रसिद्ध है।
- **सर्वाधिक बकरियाँ बाड़मेर, जोधपुर में** जबकि **न्यूनतम बकरियाँ धौलपुर में** पाई जाती हैं।
- **रामसर (अजमेर)** स्विट्जरलैंड की वित्तीय सहायता से बकरी विकास एवं चारा उत्पादन केंद्र स्थापित है।
- बकरी के मांस को चेवण कहते है।

<u>बकरी की नस्लें</u>

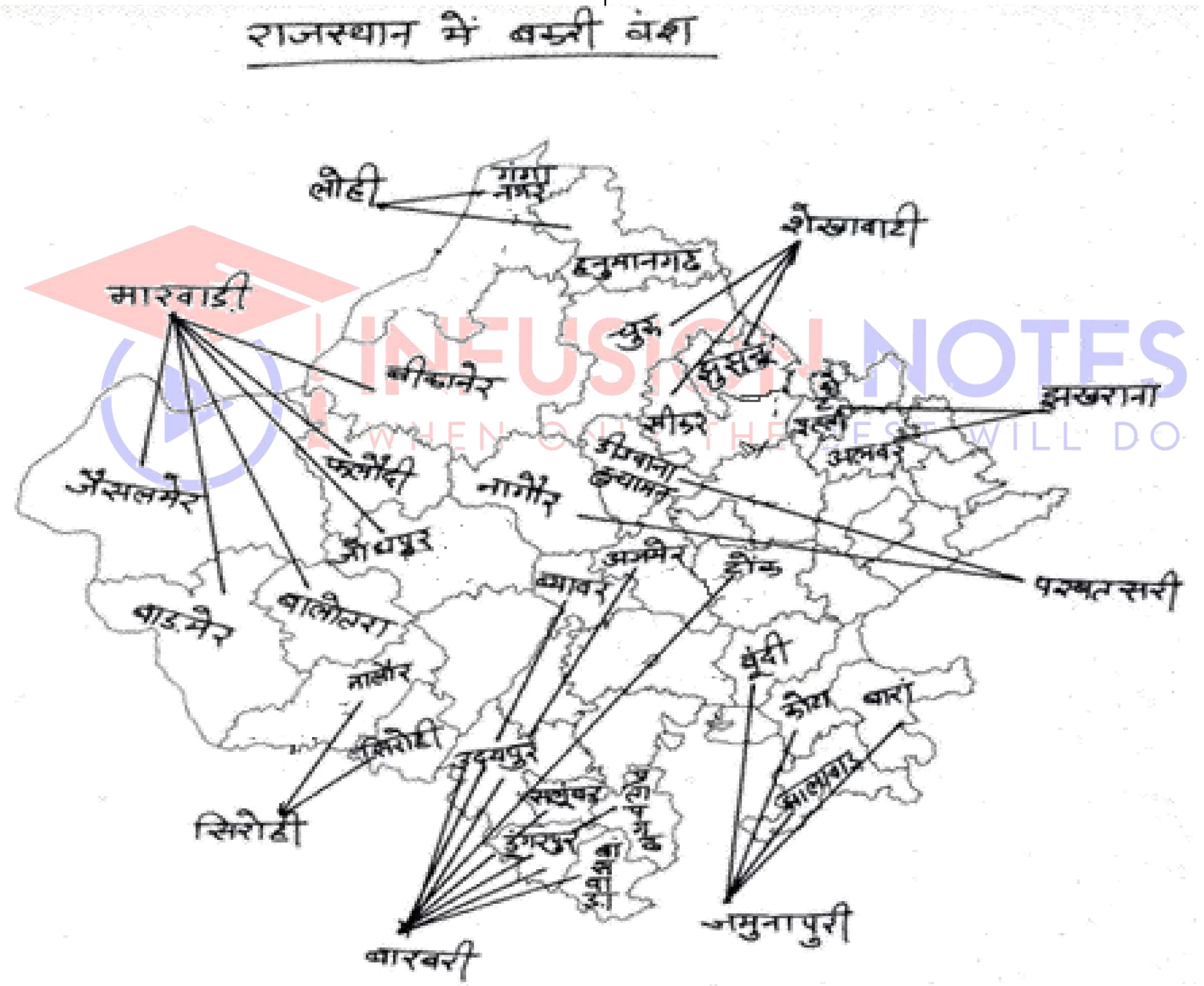

मारवाड़ी या लोही बकरी :-

- राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों जैसे जोधपुर, फलौदी, बालोतरा, पाली, नागौर, बीकानेर, जालौर, जैसलमेर व बाड़मेर आदि में पाई जाती है ।
- इसके शरीर से प्राप्त होने वाले **बाल गलीचे व नंदा** बनाने के काम आते हैं।

2. **जखराना या अलवरी :-**

- मूल स्थान- जिला कोटपूतली-बहरोड़ (जखराना गाँव) व अलवर में भी पायी जाती है।
- यह **अधिक दूध** देने के लिए प्रसिद्ध है।

3. **बारबरी / बडवारी :-**

- यह बाँसवाड़ा, धौलपुर, भरतपुर, अलवर, करौली, व सवाई माधोपुर में पाई जाती है ।

औरंगजेब की राजपूत नीति :-

- राजपूतों के साथ औरंगजेब के संबंध प्रारम्भिक काल में पूर्व की परम्पराओं के अनुसार ही मधुर थे उन्हें राज्य का साझीदार समझा जाता था तथा उन्हें जहाँगीर एवं शाहजहाँ काल से अधिक सम्मान मिलता था।
- राजपूतों में आमेर का कछवाहा शासक जयसिंह औरंगजेब के अत्यधिक निकट था। इसी प्रकार मारवाड़ का राठौड़ शासक जसवन्त सिंह तथा मेवाड़ का सिसोदिया शासक राजसिंह भी औरंगजेब के कृपा पात्र थे। धीरे-धीरे राजपूतों औरंगजेब के संबंध नकारात्मक स्वरूप को प्राप्त होने लगा। 1666 ई. में शिवाजी के आगरा में कैद से भाग निकलने के कारण इन अफवाहों को बल मिला कि जयसिंह एवं जसवन्त सिंह शिवाजी से सहानुभूति रखते हैं। शिवाजी को जयसिंह के पुत्र रामसिंह की निगरानी में नजरबन्द रखा गया था।
- नाराज औरंगजेब नए जयसिंह को दक्कन के सर सूबेदार पद से हटा दिया एवं उसे वापस बुला लिया। में राजपूतों को सुदूर पूर्वोत्तर तथा पश्चिमोत्तर क्षेत्रों में तैनात किया जाने लगा। जैसे जसवन्त सिंह को पश्चिमोत्तर सीमा अफगानिस्तान में जमरूद के थानेदार जैसे अत्यंत छोटे पद पर नियुक्त कर दिया गया।

मारवाड़ :-

- 1678 ई. में जसवन्त सिंह की जमरूद में मृत्यु के बाद मारवाड़ में उत्तराधिकार की समस्या खड़ी हो गई। गद्दी के कई दावेदार सामने आये जिनमें से इन्द्र सिंह को औरंगजेब ने मान्यता दी परन्तु मारवाड़ के राठौड़ सरदारों एवं रानी के विरोध के कारण वह सत्ता पर अधिकार नहीं कर पाया। और इसी समय जसवन्त सिंह की दो गर्भवती रानियों को पुत्र उत्पन्न हुए।
- इनको लेकर दुर्गादास तथा शिशुओं की माताएँ औरंगजेब के पास दिल्ली पहुँची। ताकि अपना दावा पेश कर सकें। परन्तु औरंगजेब ने रियासत को विभाजित करने का निर्णय ले लिया था।
- फलतः इस निर्णय का विरोध करते हुए दुर्गादास एक राजकुमार (अजीत सिंह) के साथ भाग गया। तथा राठौड़ों ने अजीत सिंह को उत्तराधिकार मान लिया जबकि दूसरे बच्चे को औरंगजेब नए मुसलमान बनाकर मुहम्मदी राज नाम दिया। औरंगजेब ने समस्या समाधान में अदुरदर्शिता दिखाते हुए मारवाड़ को मुग़ल साम्राज्य में मिलाने का निश्चय किया। साथ ही मारवाड़ की राजधानी जोधपुर पर अधिकार कर लिया। वहाँ मन्दिर तोड़ने के लिए मुहतसिब भि तैनात कर दिए गए। और अप्रैल 1679 ई. में जजिया कर को पुनः लगा दिया और जसवन्त सिंह का सिंहासन 56 लाख रुपये में नागौर को बेच दिया।
- पीढ़ियों से मुगलों के लिए अपना रक्त बहा रहे राजपूतों के साथ औरंगजेब का यह व्यवहार उसकी अदुरदर्शिता का एक उदहारण है। उसकी इस नीति से मुग़ल सरदारों में भी बेचैनी फैली जबकि राठौड़ों ने दुर्गादास के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया।
- अजीत सिंह (जसवन्त सिंह का पुत्र) को अंततः 1909 ई. में मुग़ल बादशाह बहादुरशाह ने शासक मान लिया। इस तीस वर्षीय युद्ध (1679–1709 ई. तक) के नायक दुर्गादास की तुलना कर्नल टॉड नए महान योद्धा युसीलीज से की है।

मेवाड़ :-

- मेवाड़ के राजा ने औरंगजेब का उत्तराधिकार युद्ध में समर्थन किया था तथा औरंगजेब ने राणा को माँडल, बिदनूर और माँडलगढ़ के परगने भी दिए थे, परन्तु कालान्तर में जजिया आरोपित करने के कारण मेवाड़ से मुगलों के संबंध बिगड़ गए।
- इन दो राजपूतों के अतिरिक्त अन्य राजपूत राज्यों से औरंगजेब के संबंध सामान्य रहे।

चौहान वंश का इतिहास

अजमेर के चौहान

वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम)

शाकम्भरी का प्राचीन नाम सपादलक्ष था। सपादलक्ष का अर्थ सवा लाख गांवों का समूह। यहीं पर वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम) ने चौहान वंश की नींव डाली। इसलिए इन्हें चौहानों का आदि पुरुष भी कहते हैं। वासुदेव प्रथम शाकम्भरी/सांभर को अपनी राजधानी बनाया। सांभर झील का निर्माण भी इसी शासक ने करवाया।

पृथ्वीराज प्रथम

चौहान वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक पृथ्वीराज प्रथम था। पृथ्वीराज प्रथम ने गुजरात के भडौच पर अधिकार कर वहां आशापूर्णा देवी के मंदिर का निर्माण करवाया।

अजयराज प्रथम

पृथ्वीराज के बाद अजयराज शासक बना। **अजयराज ने 1113 ई. में पहाडियों के मध्य अजमेरु (अजमेर) नगर की स्थापना की** और इसे नई राजधानी बनाया। अजयराज ने पहाडियों के मध्य अजमेर के दुर्ग का निर्माण करवाया। मेवाड़ के पृथ्वीराज सिसोदिया ने 15 वीं सदी में इसका नाम तारागढ़ दुर्ग कर दिया। इस दुर्ग को पूर्व का जिब्राल्टर कहा जाता है।

अर्णोराज (1133-1155 ई.)

अर्णोराज अजयराज का पुत्र था। अर्णोराज का शासनकाल 1133 -1155 ई. तक रहा।

1. **अर्णोराज ने 1137 ई. में आनासागर झील का निर्माण करवाया।**
2. **आर्णोराज ने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण अर्णोराज ने करवाया।**
3. अर्णोराज को गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल ने आबू के निकट युद्ध में पराजित किया था

4. अर्णोराज के पुत्र जगदेव ने अर्णोराज की हत्या कर दी इसलिए जगदेव को चौहानों में पितृहन्ता कहा जाता है।

विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) (1153-1164 ई.)

1. बीसलदेव का कार्यकाल चौहान वंश का स्वर्णकाल कहा जाता है।
2. **बीसलदेव को कविबांधव भी कहा जाता है।**
3. बीसलदेव ने हरिकेलि (नाटक) की रचना की। जिसमें शिव-पार्वती व कुमार कार्तिकेय का वर्णन है।
4. बीसलदेव दरबारी कवि **नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो ग्रन्थ की रचना की।**
5. बीसलदेव कवि **सोमदेव ने ललित विग्रहराज की रचना की।**
6. विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलसागर तालाब (वर्तमान बीसलपुर बाँध के स्थान पर) का निर्माण करवाया था।
7. 1153 से 1156 ई. के मध्य विग्रहराज (बीसलदेव) ने अजमेर में एक संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया जिसे **1200 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने संस्कृत विद्यालय को तुड़वाकर अढ़ाई दिन का झोपडा बनवाया।**
8. विग्रहराज के बारे में किल होर्न ने लिखा है कि "**वह उन हिन्दू शासको में से एक था जो कालीदास व भवभूति से होड़ कर सकता था**"।

पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चौहान)

- 1177 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने 11 वर्ष की अवस्था में राज गद्दी संभाली। उनके पिता का नाम सोमेश्वर तथा माता का नाम कर्पूरी देवी था।
- रायपिथौरा - पृथ्वी राज तृतीय चौहान को यह उपाधि प्रदान की गई है।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **पुत्र गोविंदराज चौहान** था।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **प्रधानमंत्री - कैंमास (कदंबदास)**
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय की उपाधियाँ** - राय पिथौरा, दल पंगुल (विश्व विजेता) आदि।
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय के दरबारी कवि** - चंदरबरदाई, वागीश्वर, विद्यापति गौड़, जयानक, जनार्दन, आशाधर आदि।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय अजमेर के चौहान वंश का अंतिम प्रतापी शासक था, जिसने दिल्ली और अजमेर राजधानीयों से शासन किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय मात्र 11 वर्ष की अल्पायु में शासक बने थे, इसलिए शासन की बागडोर इसकी माँ कर्पूरी देवी ने संभाली।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने भंडानक जाति एवं नागार्जुन के विद्रोह का दमन किया था।
- **महोबा/तुमुल का युद्ध** - पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने अपनी दिग्विजय की नीति के तहत 1182 ई० में **'महोबा के युद्ध/तुमुल का युद्ध'** (उत्तर प्रदेश) में परमर्दी देव चन्देल (परमर्दी देव के सेनापति आल्हा व उदल) को पराजित किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय कन्नौज के राजा जयचंद गहड़वाल को हराकर उसकी पुत्री संयोगिता को स्वयंवर से उठाकर ले गया, जिससे पृथ्वीराज चौहान तृतीय एवं जयचंद गहड़वाल के बीच दुश्मनी बढ़ गयी। इसी वजह से तराइन के युद्ध में जयचंद गहड़वाल ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय की बजाय मोहम्मद गौरी की सहायता की थी।

तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)

तराइन का प्रथम युद्ध 1191 ई० में पृथ्वीराज चौहान तृतीय व मोहम्मद गौरी के मध्य तराइन के मैदान करनाल (हरियाणा) में हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान तृतीय की सेना की ओर से गोविंदराज तोमर ने तीर चलाया जिससे मोहम्मद गौरी घायल होकर वापस गजनी चला गया। इस प्रकार पृथ्वीराज चौहान तृतीय विजय हुई।

तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

तराइन का द्वितीय युद्ध भी पृथ्वीराज चौहान तथा मौहम्मद गौरी बीच लड़ा गया। इसमें मौहम्मद गौरी की विजय हुई। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के स्वसुर जयचंद ने मौहम्मद गौरी का साथ दिया, क्योकि पृथ्वीराज चौहान ने जयचंद की पुत्री संयोगिता का हरण कर उससे विवाह किया था।

1. पृथ्वीराज चौहान के मित्र एवं दरबारी कवि **चंद्रबरदाई ने पृथ्वीराज रासो नामक ग्रन्थ। लिखा**
2. **जयानक ने पृथ्वीराज विजय नामक ग्रन्थ लिखा।**
3. सूफी संत **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती पृथ्वी राज चौहान के समय अजमेर आये।**
4. पृथ्वीराज चौहान तृतीय के घोड़े का नाम नाट्यरंभा था

रणथम्भौर के चौहान

रणथम्भौर और दिल्ली सल्तनत

- हम्मीर चौहान (1282-1301 ई.) अपने पिता जैत्रसिंह का तीसरा पुत्र था। सभी पुत्रों में योग्य होने के कारण उसका राज्यारोहण उत्सव जैत्रसिंह ने अपने जीवनकाल में ही 1282 ई. में सम्पन्न करवा दिया था।
- वह रणथम्भौर के चौहान शासकों में अंतिम परंतु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शासक था और उसके शासनकाल की जानकारी अनेकानेक ऐतिहासिक साधनों से प्राप्त होती है। मुस्लिम इतिहासकारों, अमीर खुसरो तथा जियाउद्दीन बरनी की रचनाओं के अलावा न्यायचंद्र सूरी के हम्मीर महाकाव्य, चंद्रशेखर के सुर्जन चरित्र और बाद में लिखे गये हिन्दी ग्रन्थों - जोधराजकृत हम्मीर रासो तथा चंद्रशेखर के हम्मीर हठ में हमें हम्मीर की शूरवीरता तथा विजयों का विस्तृत विवरण मिलता है।
- दिग्विजय के बाद हम्मीर ने कोटि यज्ञों का आयोजन किया जिससे उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।

- मेवाड़ के शासक समरसिंह को पराजित कर हम्मीर ने अपनी धाक सम्पूर्ण राजस्थान में जमा दी।

हम्मीर और जलालुद्दीन खिलजी-

- हम्मीर को अपनी शक्ति बढ़ाने का मौका इसलिए मिल गया कि इस दौरान दिल्ली में कमजोर सुल्तानों के कारण अव्यवस्था का दौर चल रहा था।
- 1290 ई. में दिल्ली का सुल्तान बनने के बाद जलालुद्दीन खिलजी ने हम्मीर की बढ़ती हुई शक्ति को समाप्त करने का निर्णय लिया। सुल्तान ने झाँई पर अधिकार कर रणथम्भौर को घेर लिया किन्तु सभी प्रयत्नों की असफलता के बाद शाही सेना को दिल्ली लौट जाना पड़ा।
- सुल्तान ने 1292 ई. में एक बार फिर रणथम्भौर विजय का प्रयास किया। हम्मीर के सफल प्रतिरोध के कारण इस बार भी उसे निराशा ही हाथ लगी।
- जलालुद्दीन ने यह कहते हुए दुर्ग का घेरा हटा लिया कि "मैं ऐसे सैंकड़ों किलों को भी मुसलमान के एक बाल के बराबर महत्त्व नहीं देता।"
- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के इन अभियानों का आँखों देखा वर्णन **अमीर खुसरो ने 'मिफ्ता-उल-फुतूह'** नामक ग्रंथ में किया है।

हम्मीर और अलाउद्दीन खिलजी –

- 1296 ई. में अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कर दिल्ली का सुल्तान बन गया।

अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिये जिनके निम्नलिखित कारण थे –

1. रणथम्भौर सामरिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण था। अलाउद्दीन खिलजी इस अभेद दुर्ग पर अधिकार कर राजपूत नरेशों पर अपनी धाक जमाना चाहता था।
2. रणथम्भौर दिल्ली के काफी निकट था। इस कारण यहाँ के चौहानों की बढ़ती हुई शक्ति को अलाउद्दीन खिलजी किसी भी स्थिति में सहन नहीं कर सकता था।
3. अलाउद्दीन खिलजी से पहले उसके चाचा जलालुद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर अधिकार करने के लिए दो बार प्रयास किए थे किन्तु वह असफल रहा। अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा की पराजय का बदला लेना चाहता था।
4. अलाउद्दीन खिलजी एक महत्त्वाकांक्षी और साम्राज्यवादी शासक था। रणथम्भौर पर आक्रमण इसी नीति का परिणाम था।

हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोहियों को शरण देना –

- नयनचन्द्र सूरी की रचना 'हम्मीर महाकाव्य' के अनुसार रणथम्भौर पर आक्रमण का कारण यहाँ के शासक हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही सेनापति मीर मुहम्मद शाह को शरण देना था।
- मुस्लिम इतिहासकार इसामी ने भी अपने विवरण में इसी कारण की पुष्टि की है। उन्होंने लिखा है कि 1299 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने दो सेनापतियों उलूग खां व नूसरत खां को गुजरात पर आक्रमण करने के लिए भेजा था।
- गुजरात विजय के बाद जब यह सेना वापिस लौट रही थी तो जालौर के पास लूट के माल के बंटवारे के प्रश्न पर 'नव-मुसलमानों' (जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के समय भारत में बस चुके वे मंगोल, जिन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया था) ने विद्रोह कर दिया। यद्यपि विद्रोहियों का बर्बरता के साथ दमन कर दिया गया किन्तु उनमें से मुहम्मदशाह व उसका भाई कैहब्रु भाग कर रणथम्भौर के शासक हम्मीर के पास पहुँचने में सफल हो गया।
- हम्मीर ने न केवल उन्हें शरण दी अपितु मुहम्मदशाह को 'जगाना' की जागीर भी दी। चन्द्रशेखर की रचना 'हम्मीर हठ' के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी की एक मराठा बेगम से मीर मुहम्मदशाह को प्रेम हो गया था और उन दोनों ने मिलकर अलाउद्दीन खिलजी को समाप्त करने का एक षड़यंत्र रचा।

अलाउद्दीन का चितोड़ पर आक्रमण

- अलाउद्दीन खिलजी की तरफ से इन विद्रोहियों को सौंप देने की माँग की गई। इस माँग को जब हम्मीर द्वारा ठुकरा दिया गया तो अलाउद्दीन खिलजी की सेना ने रणथम्भौर पर आक्रमण कर दिया।
- 1299 ई. के अंत में अलाउद्दीन खिलजी ने उलूग खां, अलप खां और नुसरत खां के नेतृत्व में एक सेना रणथम्भौर पर अधिकार करने के लिए भेजी। इस सेना ने 'रणथम्भौर की कुंजी' झाँई पर अधिकार कर लिया। इसामी के अनुसार विजय के बाद उलूग खां ने झाँई का नाम बदलकर 'नौ शहर' कर दिया।
- 'हम्मीर महाकाव्य' में लिखा है कि हम्मीर इस समय कोटियज्ञ समाप्त कर 'मुनिव्रत' में व्यस्त था। इस कारण स्वयं न जाकर अपने दो सेनापतियों – भीमसिंह व धर्मसिंह को सामना करने के लिए भेजा। इन दोनों सेनापतियों ने सेना को पीछे की तरफ खदेड़ दिया तथा उनसे लूट का माल छिन लिया।
- राजपूत सेना ने शत्रु सेना पर भयंकर हमला किया जिसमें अलाउद्दीन खिलजी की सेना को पराजय का सामना करना पड़ा। शाही सेना से लूटी गई सामग्री लेकर धर्मसिंह के नेतृत्व में सेना का एक दल तो रणथम्भौर लौट गया किन्तु भीमसिंह पीछे रह गया। इस अवसर का लाभ उठाकर बिखरी हुई शाही सेना ने अलपखां के नेतृत्व में उस पर हमला कर दिया। इस संघर्ष में भीमसिंह अपने सैंकड़ों सैनिकों सहित मारा गया। भीमसिंह की मृत्यु के लिए हम्मीर ने धर्मसिंह को उत्तरदायी मानते हुए उसे अंधा कर दिया और उसके स्थान पर भोजराज को नया मंत्री बनाया।
- झाँई विजय के बाद उलूग खां ने मेहलनसी नामक दूत के साथ हम्मीर के पास अलाउद्दीन खिलजी का संदेश

अध्याय – 7

प्रजामण्डल

- 1927 ई. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की स्थापना के साथ ही सक्रिय राजनीति का काल आरम्भ हुआ ।
- कांग्रेस का समर्थन मिल जाने के बाद इसकी शाखायें स्थापित की जाने लगी।
- 1931 ई. में रामनारायण चौधरी ने अजमेर में देशी राज्य लोक परिषद् का प्रथम प्रान्तीय अधिवेशन आयोजित किया ।
- 1938 ई. में कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित कर देशी रियासतों के लोगों द्वारा चलाये जाने वाले स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक समर्थन दिया ।
- कांग्रेस के इस प्रस्ताव से देशी रियासतों में चल रहे स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक समर्थन मिला । इन राज्यों में चल रहे आंदोलन प्रत्यक्ष रूप से कांग्रेस से जुड़ गये और राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ। प्रजामण्डल की स्थापना हुई, जिसने देशी शासकों के अधीन उत्तरदायी प्रशासन की मांग की ।

बीकानेर में प्रजामण्डल

- बीकानेर के महाराजा गंगासिंह प्रतिक्रियावादी व निरंकुश शासक थे।
- गंगासिंह (1880-1943) प्रथम भरतपुर के बाद शांति समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले एकमात्र भारतीय प्रतिनिधि व 1921 में स्थापित नरेन्द्र मण्डल के संस्थापकों में से एक थे।
- बीकानेर क्षेत्र के प्रारंभिक नेता कन्हैयालाल ढूँढ व स्वामी गोपालदास थे, इन्होंने 1907 में चूरू में सर्वहितकारिणी सभा स्थापित की।
- सर्वहितकारिणी सभा ने चूरू में लड़कियों की शिक्षा हेतु 'पुत्री पाठशाला' व अनुसूचित जातियों की शिक्षा के लिए कबीर पाठशाला स्थापित की गई। महाराजा इस रचनात्मक कार्य के प्रति भी आशंकित हो उठे और षड़यंत्र बताकर उन्हें प्रतिबंधित कर दिया।
- 26 जनवरी 1930 को स्वामी गोपालदास व चन्दनमल ब्राह्मण ने सहयोगियों के साथ चूरू के सर्वोच्च शिखर धर्मस्तुप पर तिरंगा फहराया।
- अप्रैल, 1932 ई. में जब लंदन में महाराजा गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने गये तो बीकानेर में एक दिग्दर्शन' नामक पेम्पलेट बांटे गये। जिसमें बीकानेर की वास्तविक दमनकारी नीतियों का खुलासा किया गया। लौटकर महाराजा ने सार्वजनिक सुरक्षा कानून लागू किया।
- स्वामी गोपालदास, चंदनमल बहड़, सत्यनारायण सर्राफ, खूबचन्द सर्राफ आदि को बीकानेर षड़यंत्र केस के नाम पर गिरफ्तार कर लिया गया।
- अक्टूबर, 1936 में मघाराम वैध ने कलकत्ता में बीकानेर प्रजामण्डल की स्थापना की।
- 4 अक्टूबर, 1936 ई. को प्रमुख नेता शीघ्र ही निर्वाचित कर दिये गये, जिनमें वकील मुक्ताप्रसाद, मघाराम वैध व लक्ष्मीदास शामिल थे । रघुवरदयाल ने 22 जुलाई, 1942 ई. को बीकानेर प्रजा ने परिषद् की स्थापना की, जिसका उद्देश्य महाराजा के नेतृत्व में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था।
- 1943 में गंगासिंह जी की मृत्यु के बाद शार्दुल सिंह गद्दी पर बैठे। वे भी दमन में विश्वास रखते थे।
- द्वारका प्रसाद नामक छठी कक्षा के बालक को संस्था से निकाला गया क्योंकि उसने उपस्थिति गणना के समय जयहिन्द बोल दिया था।
- 26 अक्टूबर, 1944 ई. को बीकानेर दमन विरोधी दिवस मनाया गया जो राज्य में प्रथम सार्वजनिक प्रदर्शन था। इसी बीच भारत में राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई और महाराजा ने उत्तरदायी शासन की घोषणा की।
- 30 जून, 1946 ई. में रायसिंह नगर में हो रहे प्रजा परिषद् के सम्मेलन में पुलिस ने गोलीबारी की। बदली हुई परिस्थितियों को देखते हुए सत्ता हस्तान्तरण के लक्षण जब दिखने लगे तो प्रजा परिषद् का कार्यालय पुनः स्थापित किया गया।
- 1946 ई. में ही दो समितियों, संवैधानिक समिति व मताधिकार समिति की स्थापना की गई। रिपोर्ट को लागू करने का आश्वासन तो दिया गया पर कोई ठोस कार्यवाही नहीं हो पाई व उत्तरदायी शासन की मांग अधूरी ही रही।
- 16 मार्च, 1948 ई. में जसवंत सिंह दाउदसर के नेतृत्व में मंत्रिमण्डल बना जिसे प्रजा परिषद ने अस्वीकृत कर दिया और उसके मंत्रियों ने इस्तीफा दिया।
- 30 मार्च, 1949 ई. को वृहत्तर राज्य के निर्माण के साथ रघुवर दयाल, हीरालाल शास्त्री के मंत्रिमण्डल में सम्मिलित हुए।

जैसलमेर में प्रजामण्डल

यह क्षेत्र राजस्थान का सर्वाधिक पिछड़ा क्षेत्र था, जो विस्तारित रेगिस्तान, यातायात संचार के सीमित साधनों व राजनीतिक पृथकता के कारण शेष राजस्थान से कटा ही रहा। यहाँ के महारावल का दमन अत्यन्त तीव्र था। जिसके कारण 1915 ई. में सर्व हितकारी वाचनालय मीठालाल व्यास के आशीर्वाद से सागरमल गोपा व उसके साथियों द्वारा स्थापित किया गया।

मेवाड़ में प्रजामण्डल

- उदयपुर में प्रजामण्डल आंदोलन की स्थापना का श्रेय श्री माणिक्यलाल वर्मा को जाता है। 24 अप्रैल, 1938 को श्री बलवन्तसिंह मेहता की अध्यक्षता में मेवाड़ प्रजामण्डल की स्थापना की।

- प्रजामण्डल की स्थापना के समाचारों से मेवाड़ की जनता में अभूतपूर्व उत्साह का संचार हुआ, परन्तु जैसे ही मेवाड़ सरकार को इसकी सूचना मिली, सरकार ने श्री वर्माजी को मेवाड़ से निष्कासित कर दिया तथा बिना सरकार से आज्ञा लिए सभा, समारोह करने संस्थाएँ बनाने एवं जुलूस निकालने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।
- उदयपुर सरकार द्वारा मेवाड़ प्रजामण्डल को 24 सितम्बर, 1938 को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया, परन्तु उसी दिन नाथद्वारा में निषेधाज्ञा के बावजूद कार्यकर्ताओं द्वारा विशाल जुलूस निकाला गया।
- प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं ने सरकार को अल्टीमेटम दिया कि 4 अक्टूबर, 1938 तक प्रजामण्डल से प्रतिबन्ध नहीं हटाया गया तो सत्याग्रह प्रारम्भ किया जाएगा।
- मेवाड़ सरकार ने प्रजामण्डल नेताओं व कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया । श्री भूरेलाल बया को सराड़ा किले (मेवाड़ का काला पानी) में नजरबंद कर दिया गया।
- विजयादशमी के दिन प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह प्रारम्भ किया । क्रांतिकारी रमेशचन्द्र व्यास को पहला सत्याग्रही बनकर गिरफ्तार होने का श्रेय प्राप्त हुआ। सत्याग्रहियों पर पुलिस दमन चक्र प्रारम्भ हो गया।
- इसकी परवाह न करते हुए सत्याग्रहियों ने जगह-जगह जुलूस निकालें, आमसभाएँ की एवं सरकार की आलोचना की।
- श्री माणिक्यलाल वर्मा ने 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' नामक पुस्तिका छपवाकर वितरित करवाई जिसमें मेवाड़ में व्याप्त अव्यवस्था एवं तानाशाही की आलोचना की गई।
- 24 जनवरी, 1939 को श्री माणिक्यलाल वर्मा की पत्नी नारायणी देवी वर्मा एवं पुत्री को प्रजामण्डल आंदोलन में भाग लेने के कारण राज्य से निष्कासित कर दिया गया।
- मेवाड़ में भयंकर अकाल पड़ने के कारण प्रजामण्डल ने गाँधीजी के आदेश पर 3 मार्च, 1939 को सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया। श्री वर्माजी का स्वास्थ्य खराब होने की खबर मिलने पर श्री जवाहर लाल नेहरू ने मेवाड़ सरकार को पत्र लिखा, तब 8 जनवरी, 1940 को उन्हें जेल से रिहा किया गया।
- इसके बाद प्रजामण्डल ने बेगार एवं बलेठ प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाया फलस्वरूप मेवाड़ सरकार को इन दोनों, प्रथाओं पर रोक लगानी पड़ी। यह मेवाड़ प्रजामण्डल की पहली नैतिक विजय थी।
- 22 फरवरी, 1941 को मेवाड़ प्रजामण्डल पर से प्रतिबन्ध हटने के बाद प्रजामण्डल ने सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया एवं 25-26 नवम्बर, 1941 को श्री माणिक्यलाल वर्मा की अध्यक्षता में पहला अधिवेशन आयोजित किया, जिसका उद्घाटन आचार्य 'जे. बी. कृपलानी' ने किया।
- अधिवेशन में अपार भीड़ के समक्ष राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना, सरकार द्वारा प्रस्तावित धारा सभा में संशोधन एवं नागरिक अधिकारों की बहाली आदि प्रस्ताव पारित किए गए। इसके बाद मेवाड़ के प्रत्येक जिले एवं परगने में प्रजामण्डल की शाखाएँ खोली गई।
- मेवाड़ प्रजामण्डल ने कांग्रेस द्वारा 9 अगस्त, 1942 को शुरू किये गये 'भारत छोड़ों आंदोलन' में सक्रिय रूप से भाग लेना प्रारम्भ किया।
- 20 अगस्त, 1942 को प्रजामण्डल की कार्यसमिति ने मेवाड़ महाराणा को पत्र द्वारा चेतावनी दी कि यदि 24 घंटे के भीतर महाराजा ब्रिटिश सरकार से संबंध विच्छेद नहीं करते हैं तो जन आंदोलन प्रारम्भ किया जाएगा।
- सरकार द्वारा प्रजामण्डल कार्यकारिणी के सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया तथा 23 अगस्त से जुलूस आदि पर प्रतिबंध लगा दिए गये। सरकारी दमन चक्र प्रारम्भ हो गया कार्यकर्ताओं ने सर्वत्र 'अंग्रेजों भारत छोड़ों' के नारे बुलन्द किए गये। स्त्रियों एवं छात्रों ने भी आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।
- सरकार ने बड़ी संख्या में सत्याग्रहियों को गिरफ्तार कर लिया। नारायणी देवी वर्मा, उनकी पुत्री आदि कई महिलाओं को गिरफ्तार किया गया। मेवाड़ प्रजामण्डल को मेवाड़ सरकार द्वारा वापस गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया।
- प्रजामण्डल ने भील सेवाकार्य, भील छात्रावास आदि कार्यों को पुनः प्रारम्भ किया। ठक्कर बापा की सलाह से उचित योजना बनाई गई।
- मेवाड़ हरिजन सेवक संघ के कार्यों को पुनर्गठित कर वहाँ गृह उद्योगों का विकास किया गया।
- 31 दिसम्बर, 1945 एवं 1 जनवरी, 1946 को उदयपुर के सलेटिया मैदान में 'अखिल भारतीय देशी लोक राज्य परिषद्' का छठा अधिवेशन पं. जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ जिसमें प्रस्ताव पारित कर देशी रियासतों के शासकों से बदलती राजतनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप अविलंब उत्तरदायी शासन की स्थापना की अपील की गई।

<u>मारवाड़ में प्रजामण्डल आंदोलन</u>

- जोधपुर राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना एवं नागरिक अधिकारों की माँग बीसवीं सदी के तीसरे दशक में जोर पकड़ने लगी। जागरूक कार्यकर्ताओं- जयनारायण व्यास, भँवरलाल सर्राफ, आनन्दराज सुराणा आदि ने इस हेतु 1920 में 'मारवाड़ सेवा संघ' नामक पहली राजनीतिक संस्था स्थापित की।
- परन्तु इसके कुछ समय बाद ही निष्क्रिय हो जाने के कारण 1921 ई. में इसके स्थान पर 'मारवाड़ हिताकारिणी सभा' का गठन हुआ।
- इन्होंने समय-समय पर सरकार की जनविरोधी नतियों की आलोचना की एवं विरोध प्रकट किया।
- 11-12 अक्टूबर, 1929 को मारवाड़ हितकारिणी सभा का प्रथम अधिवेश जोधपुर में आयोजित होना था परन्तु जोधपुर सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया एवं प्रमुख राजनीतिक नेताओं - जयनारायण व्यास, आनन्दराज

अध्याय – 5

लोक नाट्य एवं लोक नृत्य

राजस्थान की प्रमुख ख्याल

- **ख्याल का शाब्दिक अर्थ है - खेलना** और **दंगल का अर्थ है - खयाल की प्रतियोगिता।**
- ख्याल के सूत्रधार को हलकारा कहा जाता हैं और ख़्याल में भाग लेने वाले कलाकार को खिलाडी कहा जाता हैं।
- राजस्थान में ख्याल गायन के **प्रवर्तक मनरंग** हैं।
- ख्याल राजस्थान का प्रसिद्ध लोकनाट्य हैं।
- इसकी विषयवस्तु ऐतहासिक कथानको ,वीराख्यानो और प्रेमाख्यानों से प्रेरित होती हैं।
- क्षेत्र के आधार पर भाषागत व शैलीगत भिन्नता इसमें देखने को मिलती हैं।
- यह संगीत प्रधान तथा नृत्य/नाटक/गीत प्रधान होते है
- इसका खिलाडी संगीत का जानकार है तो ख्याल संगीत प्रधान होता हैं।
- यदि वह नर्तक है तो यह नृत्य प्रधान होता हैं।
- **प्रमुख ख्याल है :-** कुचामनी ख्याल, जयपुरी ख्याल, शेखावाटी ख्याल और
- तुर्रा कलंगी ख्याल।

तुर्राकलंगी ख्याल -

- यह ख्याल सर्वाधिक चित्तौड़गढ़ क्षेत्र में प्रचलित है और इसमें मुख्य संगीत वाद्ययंत्र चंग हैं।
- हिंदू और मुस्लिम कलाकार संयुक्त रूप से इस नाटक को प्रस्तुत करते हैं।
- **इसके प्रवर्तक** - तुर्रा (शिव) शाहअली एवं कलंगी (पार्वती) तुक नगर दो संत पीर थे।
- यह एकमात्र लोक नृत्य है, जिसे मंच पर प्रस्तुत किया जाता है, इसलिए इस ख्याल को माच का खेल कहा जाता हैं।
- इस ख्याल के प्रमुख केन्द्र घोसंडा, चितौडगढ़, निम्बाहेड़ा, तथा नीमच में प्रसिद्ध है ।
- **तुर्राकलंगी ख्याल के प्रसिद्ध कलाकार** - चेताराम सोनी, हमीद बेग, जयदयाल, ताराचंद ठाकुर, ओंकारसिंह।
- **तुर्राकलंगी की प्रमुख ख्यालें** - नसीहत, राजा हरिश्चंद्र, भक्त पूरणमल, सागर सेठ का खेल, रुक्मिणी-मंगल, राजा मोरध्वज, इंद्रसभा, रहनामीर, भक्त ध्रुव, ऊखा चरित्र आदि।

जयपुरी ख्याल -

- इस ख्याल में सभी पात्रों की भूमिका महिलाऐं निभाती हैं।
- **जयपुरी ख्याल की लोकप्रिय ख़्यालें** - जोगी-जोगन, पठान, कान-गुजरी, मियां-बीबी, रसीली तंबोलन आदि।
- इस ख्याल के प्रमुख कलाकार **'गुणीजन खाना'** के कलाकार रहे हैं।
- इसमें कविता संगीत गायन नृत्य तथा अभिनय आदि सभी विधाओं का समावेश होता है ।

कुचामनी ख्याल -

- यह ख्याल नागौर के कुचामन के आस-पास प्रचलित है।
- **कुचामनी ख्याल के प्रवर्तक** – लच्छीराम हैं । इन्होंने पूर्व प्रचलित ख्याल में नये तत्वों का समवेश किया । उन्होंने इसे ओपेरा जैसा स्वरूप प्रदान किया । इसमें लोकगीतों को प्रधानता दी । लय और ताल का समन्वय किया । और इसका प्रदर्शन खुले मंच पर किया जाता है। इसकी मुख्य विशेषता है । सरल भाषा संवाद, लोक संगीत धुनों का प्रयोग । अभिनय की सूक्ष्मता , व्यंगात्मक कथावस्तु तथा ऊँचे स्वर में गायन ।
- इसमें ढोलक, ढोल , सारंगी,तथा शहनाई वाद्य यंत्र का प्रयोग किया जाता है ।
- **कुचामनी ख्याल की प्रमुख ख़्यालें** - चाँद-नीलगिरि, राव रिड़मल, मीरां-मंगल, गोगा चौहाण आदि।
- उगमराज कुचमनी ख्याल के अन्य प्रसिद्ध खिलाड़ी है ।
- यह ख्याल सायंकाल से आरम्भ होकर सुबह तक खेला जाता है ।

शेखावाटी / चिड़ावा ख्याल -

- इस ख्याल के प्रवर्तक **'नानूराम चिड़ावा'** थे, जबकि **दुलिया राणा** ने इस ख्याल को प्रसिद्ध किया था।
- इस खेल के अन्य खिलाड़ी सोहन लाल व बंसी बनारसी प्रमुख है ।
- नानूलाल राणा एवं उजीरा तेजी (वजीरा) के काल को शेखावाटी ख्याल का स्वर्णकाल कहलाता है।
- यह ख्याल मुख्य रूप से शेखावाटी में खेला जाता है । इस लोक नाट्य की प्रमुख विशेषताएं
- कुशल पद संचालन,
- पूर्ण सम्प्रेषित हो सके उस भाषा, शैली और मुद्रा में गीत गायन ।
- हारमोनियम,सारंगी सहनाई, बांसुरी, नक्कारा तथा ढ़ोलक वाद्यों की संगत ।
- स्त्री चरित्रों का अभिनय पुरुषों द्वारा किया जाता है ।
- इस ख्याल के मुख्य खिलाड़ी मिरासी,ढोली,सरगडा आदि पेशेवर जातियों के होते हैं ।
- नानूराम शेखावाटी ख्याल के मुख्य खिलाड़ी चिड़ावा (झुझुनू) के थे तथा ये मुसलमान जाति से थे । इनके द्वारा रचित ख्याल लोकनाट्य की धरोहर हैं ।
- नानूराम रचित लोकनाट्य है हीर राँझा , कर्मचंद , ढोला मरवण , आल्हादेव, जयदेव कलाली तथा भृतहरि ।

दुलिया राणा :- यह नानूराम के शिष्य थे तथा इन्होंने शेखावाटी ख्याल की परम्परा को आगे बढाया । यह अच्छे गायक होने के साथ अच्छे नृतक भी थे । दुलिया राणा स्त्री चरित्रों को कुशलता पूर्वक निभाते थे । इनके पुत्र सोहनलाल तथा पौत्र बंसी बनारसी ने शेखावाटी ख्याल को समृद्ध बनाया ।

अली बख्शी ख्याल -

- यह ख्याल मंडावर (खैरथल-तिजारा) के राव राजा अली बख्श के समय मंडावर क्षेत्र में प्रसिद्ध हुई।
- इस ख्याल के **प्रवर्तक अलीबख्श** थे।
- इस ख्याल का सबसे पहला ख्याल कृष्णलीला है, जो ख्याल शैली के नाट्यों में सर्वश्रेष्ठ माना गया।
- **अलीबख्शी द्वारा रचित प्रमुख ख्याल** - कृष्ण लीला, चंद्रावत, निहालदे, गुलकावली, अलवर का सिफ़्तनामा आदि।

कन्हैया दंगल ख्याल -

- यह ख्याल महावीरजी (करौली)/सवाईमाधोपुर, भरतपुर तथा धौलपुर क्षेत्रों में प्रचलित है। यह विधा मीणा जाति में प्रचलित है ।
- इस ख्याल में दो या दो से अधिक पार्टियों के बीच कन्हैया गीतों का मुकाबला होता है, इसलिए इसे **'कन्हैया दंगल'** कहते है।
- कन्हैया ख्याल का मुख्य पात्र मेडिया होता है ।
- इस ख्याल की मुख्या कहानी को कहन कहते हैं ।

भेंट दंगल ख्याल -

- यह ख्याल धौलपुर के बाड़ी बसेड़ी क्षेत्र में सर्वाधिक प्रचलित है।
- इस ख्याल के विषय देवी-देवताओं से जुड़े होते है।

ढप्पाली ख्याल -

- यह ख्याल भरतपुर, अलवर, लक्ष्मणगढ़ के क्षेत्रों में प्रचलित है।
- इस ख्याल का आयोजन किसी मान्यता अथवा बोलाया से जुड़ा रहता है।

हेला ख्याल -

- इस ख्याल के **प्रवर्तक हेला शायर** थे और यह ख्याल लालसोट (दौसा) और सवाईमाधोपुर के क्षेत्रों में प्रसिद्ध है।
- इस ख्याल का मुख्य संगीत वाद्ययंत्र नौबत है, लेकिन इस ख्याल के शुरू होने से पहले बम वाद्य बजाया जाता है।
- यह ख्याल संगीत दंगल के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- इसकी मुख्य विशेषता **'हेला देना'** (लम्बी टेर से आवाज देना) रही है।

राजस्थान का रम्मत लोकनाट्य

- रम्मत की उत्पत्ति जैसलमेर से हुई, लेकिन बीकानेर की रम्मत प्रसिद्ध है।
- बीकानेर में आचार्यों की चैक रम्मतों के लिए प्रसिद्ध हैं।
- होली तथा सावन के त्यौहार पर होने वाली काव्य प्रतियोगिताओं से रम्मत का उद्भव हुआ है ।
- जैसलमेर में **तेज कवि** ने रम्मतों का अखाडा प्रारम्भ किया था।
- बीकानेर में रम्मतों का प्रारम्भ **'फक्कड़दाता री रम्मत '** से होता है।
- **प्रमुख रम्मत** - पूरन भक्त, मोरध्वज, लैला-मजनूं, अमरसिंह राठौड़ री रम्मत, बारह गुवाड री रम्मत, रावलों की रम्मत, हिडाउमेरी की रम्मत, फागूजी री रम्मत, मनीरामजी री रम्मत, भक्त प्रह्लाद की रम्मत आदि।
- रम्मत खेलने वाले **'खेलार'** कहलाते है।
- **तेजकवि द्वारा रचित रम्मतें** - मूमल, जोगी भर्तृहरि, छबीली तम्बोलन आदि।
- प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं रामगोपाल जो मेहता, साईं सेवग, गंगादास सेवग, सूरज, काना, सेवग, जीतमल और गींडोजी ।
- **रम्मत की विशेषताएं :-** इसकी प्रमुख विशेषता इसकी साहित्यिकता है ।
- इसके आरम्भ होने से पूर्व कलाकार मंच पर आकार बैठ जाते हैं ताकि दर्शक उनके गेटअप को देख सकें ।
- इसमें गाये जाने वाले गीत गणपति वन्दना, रामदेवजी,के भजन लावणी तथा चौमासा (वर्षा ऋतु से सम्बंधित होते हैं ।
- रम्मत में नगाड़ा तथा ढोलक वाद्यों की संगत होती है ।

राजस्थान का तमाशा लोकनाट्य

- तमाशा मूल रूप से महाराष्ट्र का है।
- तमाशा एक खुले मंच पर होता है, जिसे **अखाड़ा** कहा जाता है।
- तमाशा लोकनाट्य जयपुरी ख्याल और ध्रुपद गायन का मिश्रित रूप है।
- तमाशा में संगीत, नाटक और गायन तीनों की प्रधानता है।
- तमाशा के प्रवर्तक पंडित बंशीधर भट्ट थे, जो माधोसिंह के काल के प्रसिद्ध गायक थे।
- तमाशे की शुरुआत राजस्थान में सवाई प्रतापसिंह के काल में हुई।
- **तमाशा लोकनाट्य के मुख्य वाद्ययंत्र** - हारमोनियम, तबला, सारंगी और नक्कारा।
- तमाशा के नृत्यकार **'गोपाजी भट्ट'** है।
- वासुदेव भट्ट ने हीर गोपीचंद तथा हीर रांझा तमाशा प्रारम्भ किया था।
- गोपीजी भट्ट, फूलजी भट्ट, वासुदेव भट्ट इसके प्रसिद्ध कलाकार हैं।

राजस्थान का नौटंकी लोकनाट्य

- नौटंकी में **नौ प्रकार के वाद्ययंत्रों का उपयोग** किया जाता है।
- राजस्थान में नौटंकी **डीग जिले की प्रसिद्ध** है, हाथरस शैली की नौटंकी भरतपुर में प्रसिद्ध है।
- राजस्थान में नौटंकी की शुरुआत डीग निवासी **भुरीलाल** ने की।
- नौटंकी की उत्पत्ति मूल रूप से उत्तर प्रदेश में हुई थी।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/ny6pbb 1 web.- https://shorturl.at/iIVKO

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (Ist Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 483+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
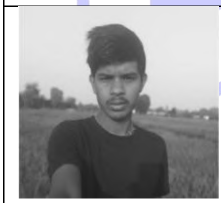	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
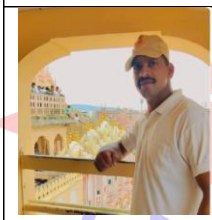	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 Admit Card HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION	Jind (Haryana)

And many others……

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/ny6pbb

Online Order करें - https://shorturl.at/liVKO

Call करें - 9887809083